वसंत भाग 2

‘मिठाईवाला’

(मॉड्यूल–2/2)

पाठ के बारे में भाग– 2

‘भगवती प्रसाद बाजपेयी’ द्वारा लिखित इस पाठ में एक पिता का अपने बच्चों के प्रति स्नेह के भाव का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है। भाग-1 की कथावस्तु में एक व्यक्ति का फेरीवाले के रूप में अलग–अलग वस्तुएँ (पहले खिलौने फिर मुरलियाँ) लेकर गाँव आना और गा–गाकर बहुत ही सस्ते दामों में वस्तुओं को बेचना।

भाग–2 की कथावस्तु में पुनः उसी फेरीवाले का आठ महीनों बाद मिठाई लेकर आना और उसी मादक स्वर में गाकर मिठाई बेचना तथा रोहिणी के आग्रह करने पर अपनी वास्तविक स्थिति बताना। वह उन बच्चों में अपने बच्चों की छवि देखता तथा बच्चों का स्नेह प्राप्त करके उसे असीम सुख, आनंद और संतोष की प्राप्ति होती है। अब आगे भाग-2 की मुख्य कथावस्तु इस प्रकार है-----

मिठाईवाला

आठ मास बाद–

सरदी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके मकान की छत पर चढ़कर आजानुलंबित केश–राशि सुखा रही थी। इस समय नीचे की गली में सुनाई पड़ा– "बच्चों को बहलानेवाला, मिठाईवाला।" मिठाईवाले का स्वर उसके लिए परिचित था, झट से रोहिणी नीचे उतर आई। उस समय उसके पति मकान में नहीं थे। हाँ, उनकी वृद्धा दादी थीं। रोहिणी उनके निकट आकर बोली– "दादी, चुन्नू–मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। जरा कमरे में चलकर ठहराओ। मैं उधर कैसे जाऊं, कोई आता न हो। जरा हटकर मैं भी चिक की ओट में बैठी रहूँगी।"

शब्दार्थ– आजानुलम्बित= घुटने तक लम्बे बाल, ठहराओ= रोको, चिक= पर्दा

दादी उठकर कमरे में आकर बोलीं– "ए मिठाईवाले, इधर आना।" मिठाईवाला निकट आ गया। बोला– "कितनी मिठाई दूँ माँ? ये नए तरह की मिठाइयाँ हैं– रंग–बिरंगी, कुछ–कुछ खट्टी, कुछ–कुछ मीठी, जायकेदार, बड़ी देर तक मुँह में टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलतीं। बच्चे बड़े चाव से चूसते हैं। इन गुणों के सिवा ये खाँसी भी दूर करती हैं! कितनी दूँ? चपटी, गोल, पहलदार गोलियाँ हैं। पैसे की सोलह देता हूँ।" दादी बोलीं– "सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पचीस तो देते।" मिठाईवाला– "नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। इतना भी देता हूँ, यह अब मैं तुम्हें क्या... खैर, मैं अधिक न दे सकूँगा।"

शब्दार्थ– जायकेदार= स्वादिष्ट, चाव= रूचिपूर्वक

रोहिणी दादी के पास ही थी। बोली– "दादी, फिर भी काफी सस्ता दे रहा है। चार पैसे की ले लो। यह पैसे रहे।" मिठाईवाला मिठाइयाँ गिनने लगा। "तो चार की दे दो। अच्छा, पच्चीस नहीं सही, बीस ही दो। अरे हाँ, मैं बूढ़ी हुई मोलभाव अब मुझे ज्यादा करना आता भी नहीं।" कहते हुए दादी के पोपले मुँह से जरा सी मुसकराहट फूट निकली। रोहिणी ने दादी से कहा– "दादी, इससे पूछो, तुम इस शहर में और कभी भी आए थे या पहली बार आए हो? यहाँ के निवासी तो तुम हो नहीं।" दादी ने इस कथन को दोहराने की चेष्टा की ही थी कि मिठाईवाले ने उत्तर दिया– "पहली बार नहीं और भी कई बार आ चुका हूँ।"

शब्दार्थ– मोलभाव= दाम–काम, निवासी= स्थायी वासी, चेष्टा= कोशिश/प्रयास

रोहिणी चिक की आड़ ही से बोली– "पहले यही मिठाई बेचते हुए आए थे या और कोई चीज लेकर?" मिठाईवाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला– "इससे पहले मुरली लेकर आया था और उससे भी पहले खिलौने लेकर।" रोहिणी का अनुमान ठीक निकला। अब तो वह उससे और भी कुछ बातें पूछने के लिए अस्थिर हो उठी। वह बोली– "इन व्यवसायों में भला तुम्हें क्या मिलता होगा?" वह बोला, "मिलता भला क्या है! यही खानेभर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ संतोष, धीरज और कभी–कभी असीम सुख जरूर मिलता है और यही मैं चाहता भी हूँ।" "सो कैसे? वह भी बताओ।"

शब्दार्थ– विस्मयादि= आश्चर्य, अनुमान= अंदाज, अस्थिर= एक जगह न रुकना, धीरज= धैर्य

"अब व्यर्थ उन बातों की क्यों चर्चा करूँ ? उन्हें आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आपको दुख ही होगा।" "जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत उत्सुक हूँ। तुम्हारा हरजा न होगा। मिठाई मैं और भी ले लूँगी।" अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने कहा– "मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी–घोड़े, नौकर–चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे–छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुंदरी थी, मेरी प्राण थी। बच्चे ऐसे सुंदर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था।

शब्दार्थ– उत्सुक= जानने की इच्छा, हरजा= हानि, कोलाहल= शोर

समय की गति! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अंत में होंगे, तो यहीं कहीं। आखिर, कहीं न जनमे ही होंगे। उस तरह रहता, घुल-घुलकर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हँस-खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफी हैं। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।"

शब्दार्थ- विधाता= भगवान, दया= कृपा

रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा– उसकी आँखें आँसुओं से तर हैं। इसी समय चुन्नू–मुन्नू आ गए। रोहिणी से लिपटकर, उसका आँचल पकड़कर बोले– "अम्माँ, मिठाई!"

"मुझसे लो।" यह कहकर, तत्काल कागज की दो पुड़ियाँ, मिठाइयों से भरी, मिठाईवाले ने चुन्नू–मून्नू को दे दीं। रोहिणी ने भीतर से पैसे फेंक दिए। मिठाईवाले ने पेटी उठाई और कहा– "अब इस बार ये पैसे न लूँगा।" दादी बोली– "अरे–अरे, न न अपने पैसे लिए जा भाई!" तब तक आगे फिर सुनाई पड़ा उसी प्रकार मादक–मृदुल स्वर में– "बच्चों को बहलानेवाला मिठाईवाला।"

'भगवतीप्रसाद बाजपेयी'

शब्दार्थ– तत्काल= तुरंत, भीतर= अन्दर

प्रश्नोत्तर भाग

प्रश्न1: मिठाईवाला अलग-अलग चीजें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?

उत्तर: बच्चे एक ही चीज से उब न जाएँ इसलिए वह बच्चों को पसंद आने वाली अलग-अलग चीजें बेचता था। दूसरा वह महीनों बाद इसलिए आता था ताकि उसकी चीजों में बच्चों की उत्सुकता बनी रहे और उसे पैसों का कोई लालच भी न था क्योंकि वह तो केवल अपने मन की संतुष्टि लिए बच्चों की मनपसंद चीज़ें बेचा करता था।

प्रश्न2: मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खिचे चले आते थे?

उत्तर: निम्नलिखित कारणों से बच्चे तथा बड़े मिठाईवाले की ओर खिंचे चले आते थे–

- मिठाई वाला मादक–मधुर ढंग से गाकर अपनी चीज़ों को बेचता था।
- वह कम लाभ में बच्चों को खिलौने तथा मिठाइयाँ देता था।
- उसके हृदय में बच्चों के लिए स्नेह था, वह कभी गुस्सा नहीं करता था।
- समय–समय पर वह हर बार नई–नई चीज़ें लाता था।

प्रश्न3: विजय बाबू एक ग्राहक थे और मुरलीवाला एक विक्रेता। दोनों अपने–अपने पक्ष के समर्थन में क्या तर्क पेश करते हैं?

उत्तर: एक ग्राहक के रूप में विजय बाबू अपना तर्क पेश करते हुए कहते है कि तुम लोगों को झूठ बोलने की आदत होती है। सबको एक ही भाव से सामान बेचते हो फिर भी ग्राहक को अधिक दाम बताकर उलटा ग्राहक पर ही एहसान का बोझ लाद देते हो। एक विक्रेता के तौर पर मुरलीवाला तर्क देता है कि ग्राहक को सामान की असली लागत का पता नहीं होता है और दुकानदार हानि उठाकर सामान क्यों न बेचे पर ग्राहक को लगता है कि दुकानदार उसे लूट ही रहा है।

प्रश्न4: खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

उत्तर: खिलौनेवाले के आने पर उसकी मादक–मधुर आवाज़ सुनकर पर बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते थे। बच्चों का झुंड खिलौनेवाले को चारों तरफ़ से घेर लेता था।

वे पैसे लेकर खिलौने का मोलभाव करने लगते थे। खिलौने पाकर बच्चे खुशी से उछलने–कूदने लगते थे।

प्रश्न5: रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण क्यों हो आया?

उत्तर: रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण हो आया क्योंकि उसे वह आवाज़ जानी–पहचानी लगी। उसे स्मरण हो आया कि खिलौनेवाला भी इसी प्रकार मधुर कंठ से गाकर खिलौने बेचा करता था और इस मुरलीवाले का स्वर भी उसी तरह का था। ये भी ठीक वैसे ही मधुर आवाज़ में गा–गाकर मुरलियाँ बेच रहा था।

प्रश्न6: किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया?

उत्तर: रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। इस तरह के जीवन में उसे अपने बच्चों की झलक मिल जाती है। उसे ऐसा लगता है कि उसके बच्चे इन्हीं में कहीं हँस–खेल रहे हैं। यदि वो ऐसा नहीं करता तो उनकी याद में घुल–घुलकर मर जाता, क्योंकि उसके बच्चे अब जिंदा नहीं थे। इसी कारण उसने इस व्यवसाय को अपनाया। बच्चों के साथ रहकर उसे संतोष, धैर्य व असीम सुख की प्राप्ति होती है।

प्रश्न7: 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा' – कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर: 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा'- कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि एक तो पहली बार किसी ने उसके प्रति इतनी आत्मीयता दिखाई, और उसके दुःख को समझने का प्रयास किया।

इसके अलावा चुन्नू और मुन्नू को देखकर उसे अपने बच्चों का स्मरण हो आया। उसे ऐसा लगा मानो वो अपने बच्चों को ही मिठाई दे रहा है।

प्रश्न८: इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं? यदि करती हैं तो क्यों? आपकी राय में क्या यह सही है?

उत्तर: वर्तमान समाज में आज भी कुछ पिछड़े ग्रामीण, रुढ़िवादी और कुछ जाति विशेष परिवारों में पर्दा प्रथा का चलन है। मेरी राय में ये बिल्कुल भी उचित नहीं है। ये प्रथा न केवल स्त्रियों की स्वतंत्रता का हनन करती है बल्कि उनकी प्रगति में भी रूकावट उत्पन्न करती है। साथ ही इस प्रकार की प्रथाएँ हमारे देश की छवि को भी विश्व–पटल पर धूमिल करती है।

भाषा की बात

प्रश्न1: मिठाईवाला बोलनेवाली गुड़िया

➢ ऊपर 'वाला' का प्रयोग है। अब बताइए कि–

(क) 'वाला' से पहले आने वाले शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में से क्या हैं?

(ख) ऊपर लिखे वाक्यांशों में उनका क्या प्रयोग है?

उत्तर:

(क) मिठाईवाला– वाला से पहले आने वाला शब्द संज्ञा है।
बोलनेवाली गुड़िया– बोलनेवाली–विशेषण शब्द है। गुड़िया शब्द संज्ञा है।

(ख) ऊपर वाले वाक्यांश में उनका प्रयोग किसी व्यक्ति या वस्तु के लिए हुआ है।

प्रश्न3: "वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं।"

"क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली?"

"दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। जरा कमरे में चलकर ठहराओ।"

उत्तर: हम ये बातें इस प्रकार कहेंगे –

1. प्रतीत होता है, वे भी पार्क में खेलने निकल गए हैं।
2. क्यों भाई मुरली किस भाव बेचते हो?
3. "दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। जरा कमरे में चलकर भाव तो कीजिए। "

प्रश्न2: 'भाषा की बात' भाग के दूसरे प्रश्न का उत्तर छात्र स्वयं की लोकभाषा की सहायता से समझने का प्रयास करें।

जैसे– "झारखण्ड की हिंदी, बंगला तथा असमी भाषा में भी 'ठो' का प्रयोग होता है।"

गृहकार्य

विद्यार्थी ‘कहानी से आगे’ तथा ‘अनुमान और कल्पना’ इन दोनों भागों में आए सभी प्रश्नों के उत्तरों को पाठ्य सामग्री की सहायता से तथा पूर्वपठित अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर सम्यक्तया विचार करके लिखने का प्रयास करें।

धन्यवाद